SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में गोवा में हिंदी

रूपा चारी, (Ph.D.), हिंदी विभाग
श्री मल्लिकार्जुन एवं श्री चेतन मंजु देसाई महाविद्यालय, काणकोण, गोवा, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
रूपा चारी, (Ph.D.), हिंदी विभाग
श्री मल्लिकार्जुन एवं श्री चेतन मंजु देसाई महाविद्यालय, काणकोण, गोवा, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/08/2022
Revised on : -----
Accepted on : 05/09/2022
Plagiarism : 02% on 29/08/2022

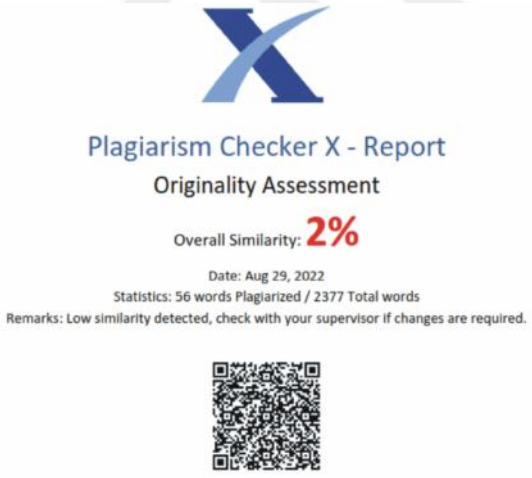

शोध सार

गोवा प्राकृतिक दृष्टि से सुंदर राज्य है। गोवा सुंदरता और पर्यटन गुणों के कारण देश और विदेश के पर्यटकों को अपनी ओर खींचता है। हर कोई गोवा में आने के लिए उत्सुक रहता है। 19 दिसंबर 1961 की आजादी के पश्चात् प्रशासनिक, शैक्षणिक, कला, संस्कृति, पर्यटन, खेल, उद्योग की दृष्टि से राज्य का स्वरूप बदलने लगा। गोवा में हिंदी का प्रचार और प्रसार तेजी से बढ़ने लगा। गोवा की स्थानीय भाषा कोंकणी है लेकिन राज्य में कोंकणी के साथ साथ मराठी, कन्नड़ और अन्य भाषाओं का भी बहुत मात्रा में प्रचलन है। गोवा में देश के हर राज्य के निवासी हैं, लेकिन हिंदी भाषियों की मात्रा ज्यादा दिखाई देती हैं। गोवा में हिंदी भाषा का प्रचार और प्रसार के मुख्य स्रोत पर्यटन, हिंदी कार्यक्रम, छोटे उद्योगों की स्थापना और उसमें हिंदी का व्यवहार, मीडिया का बढ़ता प्रभाव, हिंदी प्रदेशवासियों का गोवा में रहना आदि। गोवा में हिंदी का प्रचार और प्रसार कला, संस्कृति, शिक्षा आदि के माध्यम से हो रहा है, राष्ट्रीय एकता का यह प्रशंसनीय बिंदू है।

मुख्य शब्द

पर्यटन, व्यवसाय, फिल्म संस्कृति, राजभाषा।

गोवा राज्य प्राकृतिक सुंदरता के लिए बेजोड़ है। यहां की सुनहली रेत, सागर और ढलता–उगता सूरज देखने के लिए सात समंदर से अनेक पर्यटक गोवा में आते हैं। यहां की धरोहर, मेहमाननवाजी, हरियाली की ताजगी, कला कौशल से युक्त भूमिपुत्र, स्वच्छ जल, झरने, अमृतयुक्त नारियल पानी, खेत की सौंधी खुशबू आदि अनेक कारणों से गोवा में बार–बार आने के लिए पर्यटक मोहित हो जाते हैं। इस धरोहर की संपदा कल भी थी, आज भी है लेकिन क्या कल भी रहेगी यह प्रश्न मन में जरूर खड़ा हो जाता है। गोवा के इतिहास के

बारे में जब–जब अध्ययन किया जाता है तब साढ़े चार सौ साल तक गोवावासियों ने पुर्तुगालियों का जुल्म सहन कर लिया था यही सुनने और पढ़ने में आता है। पुर्तुगालियों के डर से गोवावासी गांव छोडकर दूसरे राज्य में अपने देव–देवताओं को लेकर जा छुपे। भारत की आजादी के 14 वर्ष बाद अर्थात् 19 दिसंबर 1961 के दिन गोवा आजाद हुआ। गोवा मुक्ति के उपरांत राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री श्री. दयानंद बांदोडकरजी ने गोवा का स्वरूप बदलने के लिए बहुत प्रयास किए। शासन, शिक्षा, खेल, संस्कृति, युवा जगत, स्वास्थ्य, बाल और महिला कल्याण, प्रसार माध्यम, समाज आदि कई पड़ावों पर परिवर्तन दिखाई देने लगा। गोवा हर दिन अपना नया रूप प्रदर्शित करने लगा और यही नया रूप पर्यटकों का सैलाब खींचता रहा जो आज तक अबाधित स्वरूप में चल रहा है।

गोवा की स्वतन्त्रता के पश्चात यानि सन् 1962 में गोवा राष्ट्रभाषा प्रचार समिती का जन्म हुआ। इसका प्रमुख कार्यालय मडगांव गोवा रहा है। सन् 1974 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा और महाराष्ट्र सभा, पुणे दोनों संस्थाओं का एकत्रीकरण कर वह 'गोमंतक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ' बना। शुरुआती दौर में हिंदी के प्रचार और प्रसार में श्री माधव पंडित, श्री. चंद्रकांत केणी, श्री. मोहनदास सुर्लकर आदि का योगदान प्रशंसनीय है।

हिंदी बोलने वाले लोगों की देश में बहुसंख्या है। हिंदी भाषी लोग देश में जहां–तहां गए, वहां अपने साथ हिंदी भाषा को लेकर गए। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही है। गोवा में हिंदी का प्रचार और प्रसार विभिन्न कारणों से होता आया है।

1. पर्यटन।
2. हिंदी स्थानिकों का निवास स्थल गोवा।
3. छोटे उद्योगों की स्थापना।
4. फिल्म जगत और टी. वी. हिंदी धारावाहिक।
5. हिंदी संस्थान – शिक्षा से जुड़े कार्यक्रम।
6. इलेक्ट्रोनिक और प्रिंट मीडिया।

1. पर्यटन

गोवा में पर्यटन हर मौसम में आकर्षित कर रहा है। यहां देश–विदेशी पर्यटकों का सैलाब उमड़ता है। अलग–अलग भाषा बोलने वाले पर्यटक गोवा की संस्कृति से मिलते–जुलते हैं। लाखों संख्या में पर्यटक चाहे वह देशी हो या विदेशी गोवा में आना, रहना, समय बिताना, मंदिर, गिरिजाघर में भेंट देना, समुद्र तट पर समय बिताना, मनपसंद खाद्य पदार्थ का सेवन करना, सभी जंजालों से मुक्त होकर ध्यानमग्न होकर किसी सुनहले विचार में मग्न होना, गांव की हरियाली और सौंधी मिट्टी की खुशबू में तरोताजा होकर वापस अपने धाम में लौटना आदि। गोवा में देशी पर्यटकों की कोई कमी नहीं है इसलिए यह कहना जायज है कि विभिन्न कला, संस्कृति, भाषा का आदान–प्रदान सहजता से होता आया है। गोवा में हिंदी का संचार, प्रचार और प्रसार इस विषय पर चर्चा करने से पहले यह कहना समाचीन होगा कि गोवा अहिंदी प्रदेश था लेकिन दिन–ब–दिन देशी पर्यटकों के (गोवा भेंट विभिन्न कारणों से हो) आने–जाने के कारण गोवा हिंदीमय हो रहा है। पर्यटकों में केरल से लेकर हिमाचल तक और गुजरात से लेकर मिजोराम तक जितने भी बंधु बांधव गोवा में भेंट देते हैं, अपनी प्रादेशिक भाषा को छोड़कर या तो अंग्रेजी अथवा हिंदी में बात करते हैं। ज्यादा से ज्यादा देशी पर्यटक हिंदी में व्यवहार करते हैं। यह दृश्य अक्सर समुद्र तटों, मंदिरों, गिरिजाघरों, होटलों में दिखाई देता है। विदेशी पर्यटक अंग्रेज़ी में अपना काम चलाते हैं लेकिन समय के साथ–साथ दुभाषियों से द्वारा बातचीत कर अपना काम आसान बना लेते हैं। यहां एक संदर्भ रेखांकित करना जरूरी है पिछले कई सालों में अनेक विदेशियों ने भारतीय संस्कृति को अपनाने में कोई कसर बाकी छोड़ी नहीं है। यही बात गोवा में प्रमाणित करते हुए यह बता देना समीचीन होगा कि गोवा कि संस्कृति और कला व्यवहार को इन विदेशियों ने बड़े ही सहजता से अपनाया है। देशी पर्यटकों का गोवा में जब आगमन हो जाता है तब एक बात पर गौर करना ठीक होगा कि बहुतांश देशी पर्यटक हिंदी में बातचीत करते हैं। गोवावासियों के साथ व्यवहार

करते वक्त हिंदी को नकारा नहीं जाता है। गोवा की मातृभाषा कोंकणी है, यहां के निवासी मराठी, हिंदी और अंग्रेजी भी जानते हैं लेकिन बोलचाल के दौरान हिंदी ही जुबान पर आ जाती है।

2. हिंदी स्थानिकों का निवास स्थल गोवा

गोवा परतंत्र से मुक्त होने के बाद उद्योग व्यवसाय की मात्रा बढ़ने लगी। इस निमित्त अनेक व्यवसायी गोवा में पधारने लगे। गोवा में स्वीट मार्ट, कपड़े की दुकान और अनेक चीजों की आवक बढ़ने लगी। व्यवसाय बढ़ने से परप्रांतियों का आना–जाना जारी रहा। सिर्फ व्यवसाय के लिए नहीं बल्कि शुरुआत के दिनों में जब मूल निवासी नियम नहीं बनाया गया था, तब विभिन्न देशवासी गोवा में आकर बस गए थे। यह देशवासी गोवा की संस्कृति से इतने मिलजुल गए कि विभिन्नता की सीमा रेखा ही मानो मिट गई। सिर्फ व्यवसायी ही नहीं बल्कि बैंक और सरकारी कार्यालय में कार्यरत् कर्मचारी और अधिकारी, शिक्षा क्षेत्र में जुड़े अनेक विद्वान गोवा में स्थायी निवासी हो गए।

3. लघु उद्योगों की स्थापना

गोवा में उद्यम जगत से जुड़े अनेक व्यवसायी हैं। गोवा भूमि की सीमा जब हर किसी के लिए खुली थी, रोजी रोटी के लिए कोई भी अपना उद्योग स्थापित कर सकता था, तब अनेक बंधु–बांधवों ने मानो यही अपनी कर्मभूमि है यह मानकर कायम स्वरूप में अपना डेरा जमा लिया। जिसका आज परिणाम बहुमात्रा में दिखाई देता है। मूल निवासी गोवा जनों ने भी उदार ह्रदय से सभी का स्वागत किया। वस्तुओं की ख़रीदारी करते हुए परप्रांतीय निवासियों से हिंदी में बात करते हैं।

4. फिल्म जगत

सन, सैंड और सी–शोर के लिए मशहूर गोवा भूमि में फिल्म इंडस्ट्री ने अपना अलग रूप धारण कर लिया है। गोवा में बनी पहली कोंकणी फिल्म 'मोगाचो आंवंडो' 24 अप्रैल, 1950 के दिन प्रदर्शित हुई थी, जिसका शूटिंग गोवा में ही हुआ था इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता है। लेकिन गोवा में फिल्म संस्कृति इतनी बढ़ गई है कि शहर, गांव के कुछ स्थान फिल्म शूटिंग के लिए घोषित हो चुके हैं। कोंकणी, मराठी, हिंदी और अन्य भाषा के फिल्म, साथ ही प्रादेशिक फिल्मों की शूटिंग के लिए गोवा बेहतर स्थान जाना जाता है। हिंदी को लोकप्रिय बनाने में भारतीय फिल्म उद्योग का बहुत बड़ा योगदान है। हिंदी फिल्मों के नायक नायिकाओं और लता मंगेशकर, रफी, किशोर कुमार जैसे पार्श्व गायक, गायिकाओं ने हिंदी को भारतीयों की भाषा बना दिया है। टेलीविज़न से भी हिंदी के प्रचार और प्रसार में बढ़ोत्तरी हुई है। लोकप्रियता का यह सिलसिला थमा नहीं है, लगातार आगे बढ़ रहा है। हिंदी के कई फिल्म्स जैसेः भूतनाथ, दृश्यम, सिंघम, कमंत प्रदकंहप, दिलवाले, दम मारो दम, गोलमाल, दिल चाहता है।

5. हिंदी संस्थान – शिक्षा से जुड़े कार्यक्रम

सरकारी कार्यालय निगम, बैंक, राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान, शिपयार्ड लिमिटेड केंद्रीय सरकार राज्य सरकार के कार्यालय, गोमंतक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ, विभिन्न विद्यालय, महाविद्यालय, गोवा विश्वविद्यालय आदि में हिंदी का प्रयोग हो रहा है। यह सच है कि हिंदी का सरकारी कार्यालयों में अंग्रेज़ी की तुलना में कम इस्तेमाल हो रहा है। गोवा का प्रशासनिक ढांचा मूलतः ब्रिटिश देन है। प्रक्रिया संबंधी साहित्य तथा संहिताएं आदि अंग्रेजी में हैं। अंग्रेज़ी का बोलबाला है लेकिन हिन्दी का प्रयोग पहले की तुलना में धीरे धीरे बढ़ रहा है। हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए गोवा में स्थित कई महाविद्यालय एवं गोवा विश्वविद्यालय कार्यरत है। हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन और अध्यापन में तुलनात्मक शोध संबंधी कार्यक्रम किए जाते हैं। राजभाषा कार्यान्वयन के तौर पर गोवा में सरकारी कार्यालयों में अनुवाद संबंधी अनेक कार्यक्रम हो जाते हैं। राजभाषा नीति के अनुरूप अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी में सृजनात्मक क्षमता विकसित करने के लिए विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा विभागीय पत्रिकाएं प्रकाशित करने का निर्देश है। इनमें साहित्य की विभिन्न विधाओं का समावेश होता है। कार्यालयीन स्तर पर हिंदी पखवाड़े आदि अनेक कार्यक्रमों का आयोजन होता हैं। साथ ही हिंदी संबंधी चर्चा–परिचर्चा, संगोष्ठी आदि के आयोजन तथा

साहित्य प्रकाशन से वर्तमान लेखकों को नई दिशा मिलती है। गोमंतक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, गोवा विश्वविद्यालय आदि संस्थाएं हिंदी सेवा में कार्यरत हैं।

6. इलेक्ट्रोनिक और प्रिंट मीडिया

भाषा चाहे कोई भी हो, जब उसका संपर्क और तादात्म्य इलेक्ट्रोनिक और प्रिंट मीडिया से हो जाता है, तब उसके रास्ते और खुल जाते हैं। गोवा में अधिकतर भाषा कोंकणी, मराठी बोली जाती थी। शिक्षा जगत से जुड़ा समाज अथवा कॉर्पोरेट सेक्टर के अधिकारी ज्यादा से ज्यादा अंग्रेज़ी में बात करना पसंद करते हैं। अनेक कारणों से गोवा में पधारे परप्रांतीय जन हिंदी में बात करना चाहते हैं। साथ ही गोवावासी भी उनके साथ उसी भाषा में बात करते हैं। इलेक्ट्रोनिक और प्रिंट मीडिया ने भी गोवा में हिंदी को अत्यंत बढ़ावा दिया है। गोवा में हिंदी दैनिक, साप्ताहिक, मासिक और विविध अंकों का वितरण हो रहा है। आकाशवाणी से हिंदी कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना इसी का एक भाग है। टी. वी. धारावाहिकों की लोकप्रियता शुरू से रही है।

उपरोक्त अनेक कारणों से गोवा में हिंदी का संचार और प्रसार करना संभव हो पाया है। देखा जाए तो इन्हीं कारणों से राष्ट्रीय एकता का भी सूत्र मिल रहा है। गोवा देश का प्रमुख पर्यटन स्थल है। यहां पर देश–विदेश से प्रकृति प्रेमी, अलग अलग भाषा में बात करने वाले पर्यटक सिर्फ हिंदी में बात करना पसंद करते हैं। भारतीय प्रवासी गोवा के होटलों, बाजारों, समुद्री तटों पर हिंदी में बात करता है। यहां के होटलों में हिंदी भाषी, हिंदी राज्यों से थिरकते हुए लोग सहज ही देखे जा सकते हैं। गोवा की मूल भाषा हिंदी नहीं है फिर भी पर्यटकों की सुविधा के लिए हर स्थानिक हिंदी में बात करता है। विविध राज्यों से पधारे पर्यटकों की प्रादेशिक भाषा जो चाहे हो, लेकिन एकसूत्रता में बंधकर हिंदी में ही बात करते है। मंदिर, गिरिजाघर अथवा किसी पर्यटन स्थल पर पधारे पर्यटक हिंदी में ही बातचीत करना पसंद करते हैं। मंदिर के बाहर बैठे फूल–नारियल विक्रेता से हिंदी में बात की जाती है और स्थानिक भी पर्यटकों से सिर्फ हिंदी में बात करते हैं। इसका सही प्रमाण कोंकण रेलवे स्टेशन, दाबोली एयरपोर्ट, शहर के बस स्थानकों पर दिखाई देता है। जब पर्यटकों का आगमन हो जाता है तो स्थानिक मोटरसाइकल पाइलट, रिक्शा पाइलट, प्राइवेट बस मालिक हिंदी में पूछताछ करते हैं। यह रूप पचास साल पहले भी दिखाई देता था। गोवावासियों ने पर्यटकों से बात की तो सिर्फ हिंदी में। पर्यटकों के भ्रमण समय में स्थानिक मार्गदर्शक ने भी हिंदी का ही सहारा लिया और यह स्वरूप आज तक चल रहा है।

पर्यटकों के मनोरंजन के लिए होट्ल में हर शाम सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। कला संस्कृति की पहचान रंगीन कार्यक्रमों से करने का प्रयास किया जाता है। नृत्य के बारे में, गोवा की विरासत के बारे में, कला और संस्कृति के बारे में हिंदी में बताया जाता है। जिस होटल में सेवा दी जाती है वहां के वेटरों को भी हिंदी में बात करने की तालीम दी जाती है। पाठशाला में हिंदी विषय पढ़ने से आज यह काम और आसान हो गया है।

पर्यटकों के लिए जिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है उनमें कई बार अन्य राज्यों की कला संस्कृति का प्रदर्शन होता है। उदाहरण के लिए गोवा शासन का बड़े पैमाने पर आयोजित होनेवाला लोकोत्सव। इस लोकोत्सव में विविध राज्यों की कला संस्कृति, हाट में प्रदर्शित की गई वस्तुएं, बाजार, मेला, प्रदर्शन आदि में विविधता में एकता दृश्यमान हो जाती है। इस प्रकार के कार्यक्रमों में हर राज्य का प्रदर्शन रहता है लेकिन विविधता में एकता रहती है। हर राज्य के कलाकार अथवा कारीगर, सिर्फ हिंदी में कार्य को संपन्न करते हैं। राष्ट्रीय एकता की ओर बढ़ाया गया यह महत्वपूर्ण आयाम हैं।

निष्कर्ष

गोवा में फिल्म जगत की अपनी एक विशेष पहचान है। इस भूमि में बहुत साल पहले मनोरंजन के स्तर पर ऑर्केस्ट्रा का आयोजन किया जाता था। ऑर्केस्ट्रा के सभी गाने हिंदी के हुआ करते थे और संचालन भी हिंदी में हो जाया करता था। यह उस जमाने की बात है जब गोवा में टी.वी. का पदार्पण नहीं हुआ था। शहरों में स्थित सिनेमाघर में प्रदर्शित सिनेमा देखकर और उसी का लोकप्रिय गाना अथवा गाने ऑर्केस्ट्रा में गाना गाना एक अंदाज बन गया था। एक विचार मन में आता है कि यदि हिंदी फिल्मे नहीं होती तो क्या परिणाम निकलता? आज जिस

तरह सिंघम, टाइगर, गजनी के डायलॉग मुखोद्‌गत किए जाते हैं, उसी तरह एक जमाने में दीवार, अमर अकबर एंथनी, कालिया की हर पंक्ति भी इसी प्रांत के जनों ने न जाने कितनी बार दोहराई है।

गोवा में हिंदी राजभाषा संपर्क भाषा के रूप में ज्यादा प्रचलित है। गोवा राज्य की भाषा कोंकणी है, यहां के जनवासी मराठी भी व्यवहार में लाते है। 'राष्ट्रीय एकता में हिंदी की भूमिका कल, आज और कल इस विषय के अंतर्गत राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में गोवा में हिंदी इस विषय संबंधित समापन में यह कहना समाचीन होगा कि वर्तमान में हिंदी के लिए कोई खतरा नहीं है। लेकिन आधुनिकता के दौर में हिंदी पर जब विदेशी भाषा का आवरण चढ़ाया जाता है तो उसका खतरा तो बढ़ेगा ही। इस खतरे का साया कला संस्कृति और विरासत पर भी रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. गोमांचल
2. राजभाषा हिंदी– *सिद्धांत और प्रयोग,* डॉ. शंभू प्रभु देसाई, अकादमिक प्रतिभा, नई दिल्ली, 110059, प्रकाशन वर्ष 2011.

****